शोध-चिंतन पत्रिका: विद्वानों द्वारा पुनरीक्षित ई शोध पत्रिका
अंक: 8; जनवरी-जून,2024

अनवर सुहैल कृत 'उम्मीद बाक़ी है अभी' में अभिव्यक्त उत्तर-आधुनिक विमर्श

अरशदा रिज़वी
प्रो० नवीन चन्द्र लोहनी

शोध-सार :

भूमंडलीकरण और उत्तर-आधुनिक विचारधारा के परिणामस्वरूप वर्तमान समय में मनुष्य का बोध बदल रहा है। उत्तर-आधुनिक विचारधारा आधुनिक युग में हुए विकास से उत्पन्न सकारात्मक और नकारात्मक सभी परिणामों को देखने की नई दृष्टि प्रदान करती है। सदियों से वंचना का शिकार रहे समूहों के अस्तित्व के लिए आवाज़ उठाती है तथा उनको केन्द्रीय स्थिति में आने के लिए अवसर प्रदान करती है। इन्हीं उत्तर-आधुनिक विशेषताओं का सम्मिश्रण अनवर सुहैल की कविताओं का केंद्रीय विचार है। समाज की वर्चस्ववादी धारा के ख़िलाफ़ एक ओर तो उनकी कविताएँ अपनी आवाज़ बुलंद करती हैं, वहीं दूसरी ओर हाशिए पर छोड़े गए समाज की अब तक मौन पड़ी वाणी को स्वर प्रदान करती हैं। भारत में जाति, धर्म, लिंग, वर्ण के आधार पर हाशिए के समाज का निर्माण किया गया, जिसके माध्यम से स्त्री, दलित, किन्नर, अल्पसंख्यक, आदिवासी और किसान-मज़दूरों को मुख्यधारा से बाहर कर दिया गया। उनकी आवाज़ को दबाया गया किन्तु अब यह दबी आवाज़ उठकर विमर्श के केंद्र में आई और अपने हक़ की जद्दोजहद शुरू की। अनवर सुहैल के काव्य ने इन सभी तमाच्छन विमर्शों को रोशनी दिखाई है। इस उत्तर आधुनिक युग में इन विमर्शों के अतिरिक्त ये अस्तित्वहीन अन्य विचारों को केन्द्र में लाते हैं जिनमें वृद्ध विमर्श, कविता विमर्श, बदलती संस्कृति तथा डिजिटल समय में अस्तित्व खोती पुस्तकें इनके विमर्श के केन्द्र में हैं।

बीज-शब्द : *उत्तर-आधुनिकता, नव्यसंस्कृतिवाद, विखंडनवाद, पर्यावरण विमर्श, वृद्ध विमर्श, स्त्री विमर्श, आदिवासी विमर्श, किन्नर विमर्श, अल्पसंख्यक और मुस्लिम विमर्श*